कड़ाके की ठंड में न जाने कहां से कोई चिंगारी फूटी और अग्निकांड में बदल गई। और एक अति प्राचीन सभ्यता की निशानियां राख हो गईं। वो सभ्यता जो खुद को सिकंदर से जोड़ती थी। वो सभ्यता जिसे विश्व का पहला लोकतंत्र माना जाता था। कुल्लू जिले में पार्वती घाटी में दस हजार फुट से ज्यादा ऊंचाई पर बसे मलाणा के करीब डेढ़ सौ घर जल गए। जमलू देवता का मंदिर भी। आग बुझाने के लिए कुदरत ने बर्फवारी करवा दी पर लोगों की मुसीबत और बढ़ा दी। अब लोगों के पुनर्वास का काम चल रहा है। सभ्यता फिर से आबाद हो जाएगी। पर यह एक ऐसा जख्म है जिसकी टीस कभी नहीं मिटेगी। जैसे एक पुरानी स्मृति का ही लोप हो जाएगा। (यह चित्र माई हिमाचल डॉट यूएस से साभार)

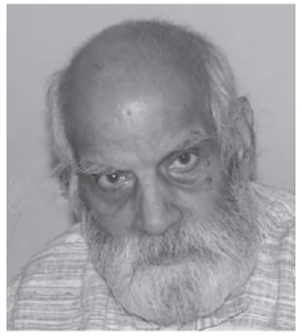

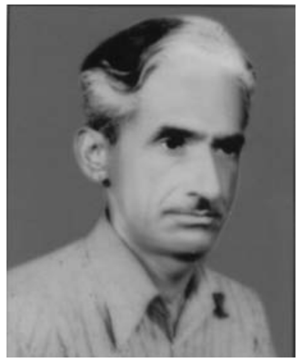

त्रिलोचन (20-08-1917-09-12-2007)

जी रहा हूं ठीक वैसे ही अभी तक
पेड़ जैसे आम का चुपचाप
और अपने मूल-दल से ले रहा हूं
सुरस जीवन का जरूरी ताप

हवा जितनी चाहिए लेता रहा हूं
और पानी पी रहा हूं मौन
कौन जीवन किस तरफ किस ओर
बना है, यह जानता है कौन

हवा चलती है, कभी तो मंद
कभी अपने वेग से अति उग्र
देखता हूं बादलों को पवनरथ पर
जलभरे काले कभी हैं कभी शुभ्र

क्षितिज तक फैला हुआ आकाश
ढंके मेघों से दिशाएं देश
रिमझिमाहट, बिजलियों की चमक, जैसे
ध्वनि-तरंगें बहुत-सी हैं शेष

शिशिर में ही एक दिन बिल्कुल अलक्षित
उमड़ते हैं रंग भर कर बौर
यही तो अनुभूतियां हैं, कल्पनामय
मैं कहीं हूं चाहिए क्या और!

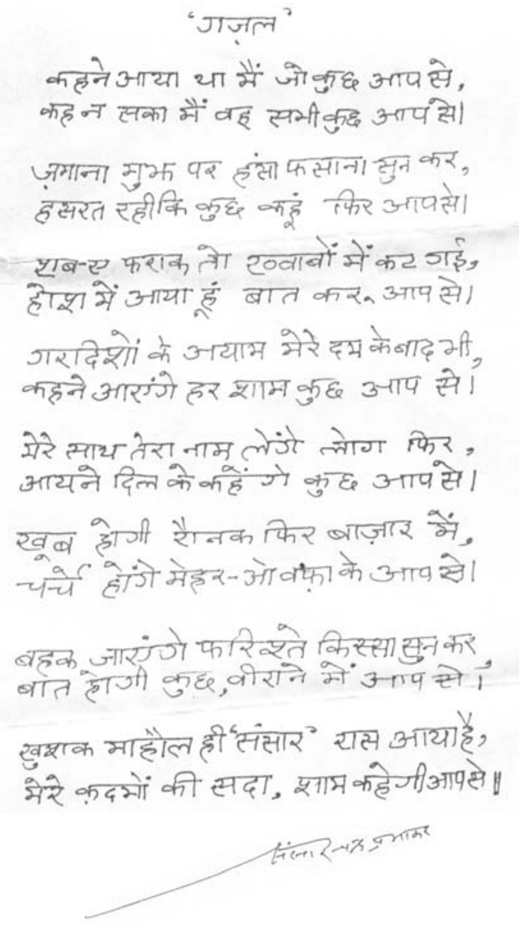

'गज़ल'

कहने आया था मैं जो कुछ आप से,
कह न सका मैं वह सभी कुछ आप से।

ज़माना मुझ पर हंसा फसाना सुन कर,
हसरत रही कि कुछ कहूं फिर आपसे।

शब-ए फराक तो ख्वाबों में कट गई,
होश में आया हूं बात कर, आप से।

गरदिशों के अयाम मेरे दम के बाद भी,
कहने आएंगे हर शाम कुछ आप से।

मेरे साथ तेरा नाम लेंगे लोग फिर,
आयने दिल के कहेंगे कुछ आप से।

खूब होगी रौनक फिर बाज़ार में,
चर्चे होंगे मेहर-ओ-वफ़ा के आप से।

बहक जाएंगे फरिश्ते किस्सा सुन कर
बात होगी कुछ, वीराने में आप से।

खुशक माहौल ही 'संसार' रास आया है,
मेरे क़दमों की सदा, शाम कहेगी आपसे॥

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त महिला पर्यावरणविद् किंकरी देवी का पीजीआई चंडीगढ़ में 30 दिसंबर 2007 को निधन हो गया। 75 वर्ष की किंकरी देवी सारी उम्र खनन माफिया के खिलाफ लड़ती रहीं। सिरमौर के संगड़ाह गांव घाटों में जन्मी श्रीमती किंकरी देवी ने जब महसूस किया कि अवैज्ञानिक खनन के कारण पेड़ नष्ट हो रहे हैं, जल-स्रोत सूख रहे हैं और पशुओं के लिए चारा नहीं मिल पा रहा है। तब उन्होंने इसके खिलाफ आवाज उठाई और न्याय के लिए शिमला हाई-कोर्ट का दरवाजा खटखटाया और वे 19 दिन तक वहां भूख हड़ताल पर बैठी रहीं।

उनके आंदोलन और प्रयासों के कारण ही प्रदेश में अवैज्ञानिक ढंग से खनन करने वालों के खिलाफ कानून बना और 1992 में हाई-कोर्ट के निदेश पर एक कमेटी गठित की गई जो हर तीन माह बाद कोर्ट को रिपोर्ट सौंपती है।
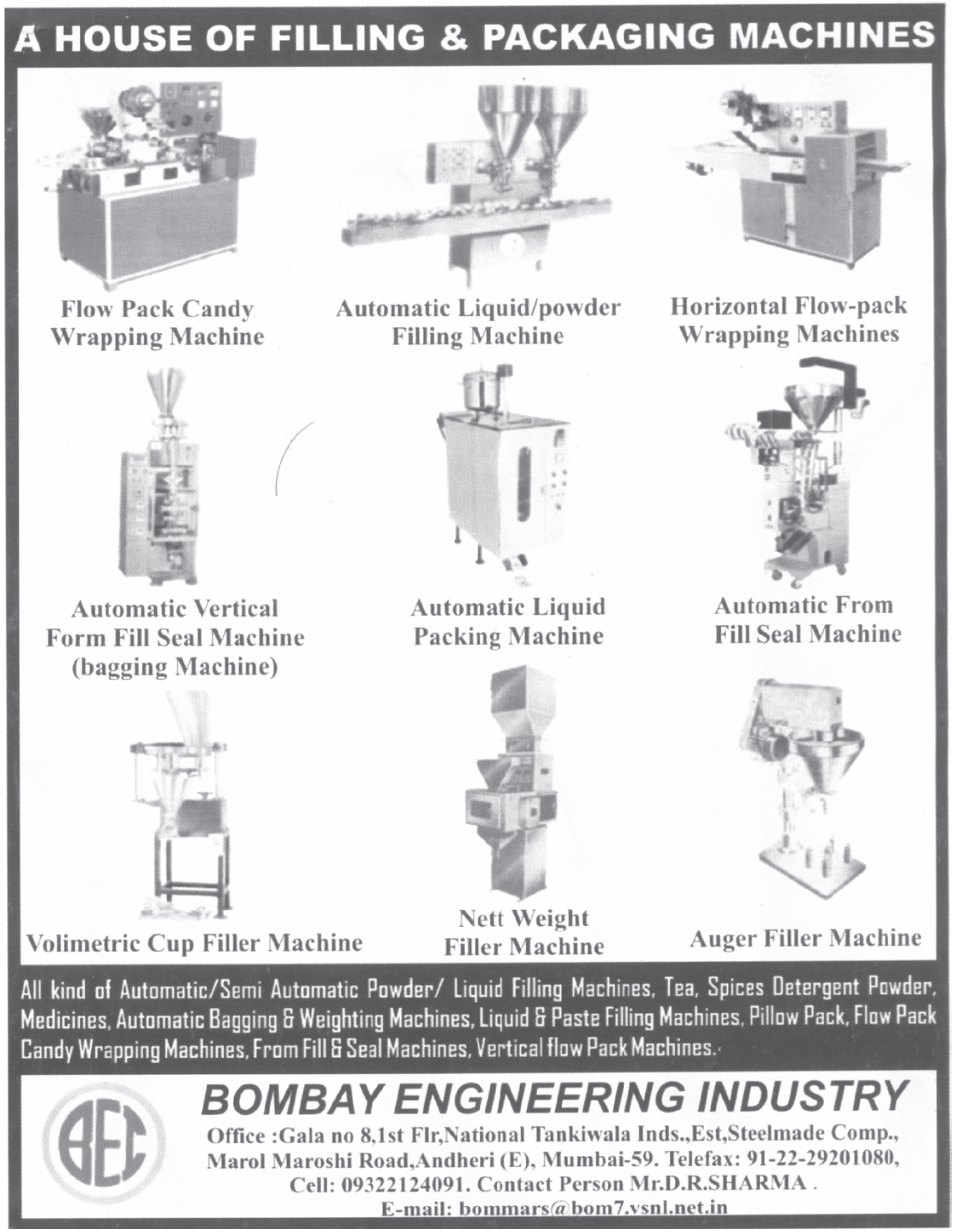
पर्यावरण प्रेम के कारण उन्होंने 1995 में बेइजिंग चीन में अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया और वहां हिलेरी क्लिंटन ने उनसे दीप प्रज्वलित कराके देश का गौरव बढ़ाया। नेपाल ने भी उन्हें लाल मोहर वाले प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। 2001 में भारत सरकार द्वारा किंकरी देवी को स्त्री शक्ति पुरस्कार व महालक्ष्मीबाई की उपाधि से नवाजा गया।